सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

प्रस्तावित वार्षिक डिप्लोमा पाठ्यक्रम

मन्दिर प्रबन्धन

प्रस्तावित पाठ्यक्रम के निम्नलिखित उद्देश्य हैं -

१- मन्दिरों के प्रबन्धन के प्रति जन जागरूकता उत्पन्न करना।

२- मन्दिर के व्यावहारिक पक्षों से जन सामान्य को लाभान्वित करना।

३- मन्दिर की व्यावहारिक एवं क्रियात्मक संरचना के प्रति बोध उत्पन्न करना।

४- मन्दिरों के वैज्ञानिक एवं कलात्मक पक्षों का भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुरूप विश्व पटल पर स्थापन।

५- सनातन धर्म की विकास यात्रा एवं लोककल्याण में मन्दिरों के महत्व का अवबोध उत्पन्न करना।

६- मन्दिरों में प्रबन्धन के लिए प्रदत्त शास्त्रीय निर्देशों की स्थापना करना।

पाठ्यक्रम संरचना

मन्दिर प्रबन्धन पाठ्यक्रम के अन्तर्गत -

१- वार्षिक डिप्लोमा पाठ्यक्रम संचालित किया जाएगा।

२- वार्षिक डिप्लोमा पाठ्यक्रम में क्रमशः कुल १८० कालांश होंगे।

३- प्रत्येक कालांश की अवधि एक घंटे की होगी।

४- यह पाठ्यक्रम ०८ क्रेडिट का होगा।

५- पाठ्यक्रम में कुल ०४ भाग एवं ०२ पत्र होंगें ।

६- निर्धारित समयानुसार कक्षायें प्रचलित होंगी।

प्रस्तावित पाठ्यक्रम

भाग - १

कालांश - ४५ (क्रेडिट-०२)

मन्दिरों की ऐतिह्य परम्परा

- मन्दिरों के ऐतिहासिक विकास का क्रम
- मठों एवं मन्दिरों की विकास की परम्परा
- मन्दिरों के विविध प्रकार
    - आगम की दृष्टि से
    - शैली की दृष्टि से
    - स्थापत्य की दृष्टि से
    - कला की दृष्टि से
    - सम्प्रदाय की दृष्टि से
- पूजन पद्धति की दृष्टि से
- चतुष्पीठों की स्थापना का इतिहास
- शक्तिपीठों का परिचय
- सिद्धपीठों का परिचय
- द्वादश ज्योतिर्लिंगों का परिचय
- प्रसिद्ध प्राकृतिक विग्रहों का परिचय
- मन्दिर प्रबन्धन के साहित्यिक स्रोतों का परिचय

भाग - २

कालांश - ४५ (क्रेडिट-०२)

- **मन्दिर निर्माण के वास्तुशास्त्रीय, शिल्पशास्त्रीय एवं स्थापत्य सिद्धांत**
  - मन्दिर हेतु भूमि चयन
  - पद वास्तु निर्धारण
  - द्वार निर्धारण
  - देवालय निर्माण मुहूर्त
  - मन्दिर की आभ्यन्तर एवं बाह्य संरचना के विविध अंग (मण्डप, भोगमण्डप, अंग, न्यास आदि का परिचय)
- मन्दिर निर्माण के शिल्पशास्त्रीय सिद्धांत
- विविध शैलियों के आधार पर मन्दिरों का निर्माण एवं वर्गीकरण
- प्रतिमा निर्माण के शिल्पशास्त्रीय सिद्धांतों का परिचय
- विश्व के प्रमुख देवालयों का वास्तु शास्त्र एवं स्थापत्य की दृष्टि से परिशीलन
- वास्तु शास्त्रीय सिद्धांतों के अनुसार मन्दिर के आभ्यन्तर एवं बाह्य प्रबन्धन का स्वरूप
- मन्दिर के पुनःस्थापन के नियम
- जर्जर मन्दिरों के नवीनीकरण के सिद्धांत

भाग - ३

कालांश - ४५ (क्रेडिट-०२)

मन्दिर में पूजा एवं उपासना प्रबन्धन

- पूजा पद्धति के प्रकार
- अर्चक की अर्हता हेतु शास्त्रों के मापदण्ड
- सेवादार हेतु शास्त्रों के मापदण्ड
- धर्मशास्त्रानुसार उपासना पद्धति का निर्णय
- मठाम्नाय पद्धति के क्रियात्मक पक्ष
- आगमों की दृष्टि से पूजन पद्धति का परिचय
- ग्रहण, उत्पात एवं आपत स्थितियों में पूजन प्रबन्धन
- आचार एवं प्रायश्चित का नियमन

भाग - ४

कालांश - ४५ (क्रेडिट-०२)

मन्दिर प्रबन्धन के विविध आयाम

- मन्दिर न्यास समिति के गठन के शास्त्रीय सिद्धांत
- देवालय का कोष प्रबन्धन
- मन्दिर द्वारा लोक कल्याण के शास्त्र सम्मत उपक्रम
- दण्ड प्रबन्धन
- लोकोत्सव परिपालन प्रबन्धन
- मन्दिर प्रशासन द्वारा प्रदान की जाने वाली उपाधियाँ
- लोक कल्याण हेतु मन्दिर प्रबन्धन के उपक्रम
- शास्त्रीय एवं लौकिक विवादों के निस्तारण में मन्दिर प्रबन्धन का दायित्व
- मन्दिर का सुरक्षा प्रबन्धन
- मन्दिर में वितरण प्रणाली का शास्त्रीय प्रबन्धन
- माननीय न्यायालयों द्वारा मन्दिर प्रबन्धन सम्बन्धी आदेश एवं निर्देशों का अवलोकन
- देवालय में जनसम्मर्द प्रबन्धन